प्रकृति के साथ एक दिन

(5 जुन : विष्व पर्यावरण दिवस पर विषेष)

श्री नरेन्द्र प्रसाद
वनिकी संकाय,
बिरसा कृषि विष्वविद्यालय, कॉके,रॉची

इस ब्रहांड में करोड़ो वर्षो से इस पृथ्वी पर मौजूद जीवन को बचाए रखने में सूर्य एवं अन्य ग्रहों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज समय–समय पर वैज्ञानिकों का अध्ययन से पता चलता है कि पृथ्वी की ही तरह मंगल एवं अन्य ग्रहों पर भी जीवन रहा होगा जो वर्तमान में पृथ्वी की तरह मौजुदा कारणों से

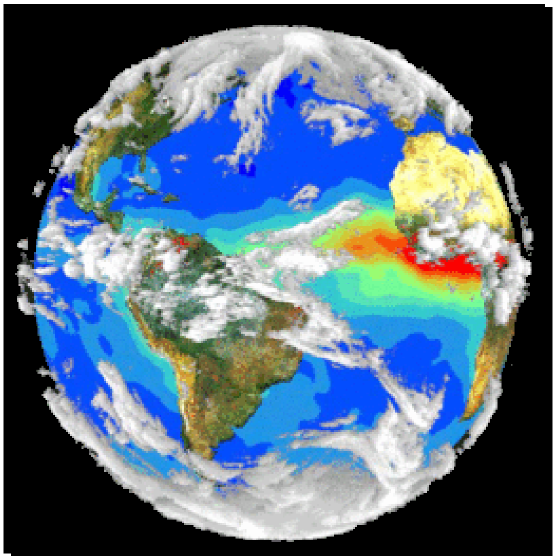

जीवन का अस्तित्व समाप्त हो गया है। अगर समय रहते हम पर्यावरण में हो रहे परिवर्तनों के प्रति सजग नहीं हुए तो पृथ्वी भी जीवन रहित अन्य ग्रहों की श्रेणी में आ जाएगा। करोड़ों वर्षो से जीवों को खान–पान उपलब्ध करा रही यह पृथ्वी आज मौसम परिवर्तन जैसी भयानक बीमारी से ग्रसित होकर बीमार हो गई हें आज उसे हमारी जरूरत है, हमें इस बीमारी से आपस में मिलकर लड़ना होगा । इस लड़ाई से लड़ने के लिए विश्व समुदाय भी अपना मन बना चुका है। वर्ष 2009 का मननेवाला विश्व पर्यावरण दिवस जो प्रत्येक वर्ष 5 जून को मनाया जाता है उसका सार भी यही है, "आपका ग्रह को आपकी जरूरत है, मौसम परिवर्तन के कारणों से समाघात/लड़ाई लड़े"। यह एक ऐसा दिवस है जिसे लोग पूर्ण रूप से पर्यावरण पर अपने आपको केन्द्रित करते है। यह 100 से ज्यादा देशों में मनाया जाता है। विश्व पर्यावरण दिवस का संस्थापन, संयुक्त राष्ट्र संध का सामान्य सभा द्वारा 1972 में किया गया था जो मानवीय प्र्यावरण पर होनवाला विचार गोष्ठी का सुभारंभ को संकेत था ।

जंगल और मौसम परिवर्तन :

विषेषज्ञों का शोध से पता चला है कि पूरे विश्व में कुल उत्सर्जित होनवाला ग्रीन हाउस गैस का 30 प्रतिशत से भी ज्यादा जंगलों का कटने एवं वनों में लगनेवाला आग के कारण होता हैं इसके अलावा लगभग 14 प्रतिशत गैसों का उत्सर्जन का कारण विश्व स्तर पर परिवहनों में हो रहे बढ़ोतरी के कारण है। इस सदी की शुरूआत तक प्रत्येक वर्ष लगभग 20 से 50 मिलियन एकड़ वन आग में जल जाता था जिसे बचाव

एवं नियंत्रण संबंधी शिक्षा/प्रशिक्षण उपलब्ध कराकर 2 से 5 मिलियन एकड़ कर दिया गया है। वानिकी विशेषज्ञ द्वारा जंगल का सतह पर पाए जानेवाले कुछ अति ज्वलनशील वनस्पति (घास एवं वृक्ष) को पहचान कर संबंधित जंगल से हटाए जाने पर काम किया जा रहा है जिससे जंगल को आगरोधी में परविर्तित किया जा सकेगा ।

वर्तमान समय में मौसम परितर्वन विष्व समुदाय के लिए एक मात्र सबसे बड़ी चुनौती है जिसका हमलोग सामना कर रहे है। सामान्यतः पृथ्वी पर 100 वर्षो में औसतन 1^{0}ॄ तापमान बढ़ता है जिसका परिणाम सुखाड़, बाढ़, गरीबी में बढ़ोतरी एवं आर्थिक क्षति होता है।

वृक्षारोपन/नया जंगलों का लगाना जो प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से कार्बन डायक्साइड का ग्रहण करता है, इसके अलावा विशेषज्ञों का जंगलों का कटाव पर रोक से संबंधित नीति पर भी आम सहमति है। वर्तमान में विश्व भर में लगभग 10 बिलियन एकड़ जंगल है। विश्व स्तरीय संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन द्वारा जारी किए गये रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 1990 और 2005 के बीच लगभग 3 प्रतिशत जंगलों का नुकसान हो चुका है। जबकि वर्ष 2000 से कमी का अनुभव किया गया है जो विश्व स्तर पर औसतन 32 मिलियन एकड़ प्रति वर्ष है। जंगलों का कटाव का मुख्य कारण प्राकृतिक संसाधनों का अमानवीय पद्वति से दोहन जिसमें मुख्य रूप से जनसंख्या में बेतहासा वृद्वि, काष्ठ, जैव इंधन का उत्पादन एवं जंगली आग है। जैविक इंधन प्राप्त करने के उद्देश्य से वृक्षों का काटना जंगलों पर सबसे ज्यादा नकारात्मक प्रभाव डालता है क्योंकि इस गतिविधी में ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन में सिर्फ वृद्वि होता दिखाई देता है उसमें कमी होने का कोई जगह नहीं है।

निराकरण :

ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन के कारणों से पता चलता है कि इसका समाधान भी जंगल से ही हो सकता है क्योंकि वृक्ष प्रकाश संश्लेषण किया के माध्यम से कार्बन को अपना कोषिका में जमा करता है जिससे बाद में वृक्षों का तना (धड़) में संग्रहित होकर लकड़ी का निर्माण होता है। एक वृक्ष लगभग 50 प्रतिशत कार्बन का बना होता है, कार्बन का कुछ भाग श्वसन किया के माध्यम से वायुमंडल में उत्सर्जित हो जाता है। संबंधित वैज्ञानिकों का समूह के अनुसार प्रत्येक वर्ष लगभग 1 से 3 मिलियन मैट्रिक टन कार्बन डायक्साईड अवशोषित कर लेता है जो उस देश का कुल उत्सर्जित होनेवाले कार्बन डायक्साइड का लगभग 20 से 46 प्रतिशत के बीच आता है। जब वृक्ष आग में जल जाता है, काट दिया जाता है या सूख जाता है तो उस स्थित में भी वृक्षों से

कार्बनडायक्साइड उत्सर्जित होकर वायुमंडल में वापस चला जाता है जो 4 से 6 प्रतिशत तक कार्बन बढ़ा देता है।

विश्व के कई देशों में पर्यावरण दिवस के दिन उस देश के प्रधानमंत्री एवं मंत्री पृथ्वी का देख रेख के लिए राजनीतिक तौर पर पर्यावरण बचाओं से संबंधित वक्तब्य देने के साथ–साथ अपने आप के प्रति वचनबद्व भी होते है एवं जो सम्बंधित बैज्ञानिकों द्वारा दिए गए निराकरण से सम्बंधित उपायों को बढ़ावा देने में सहायक होता है ।

विज्ञान एवं प्राद्यौगिकी का मानव संसाधन विकास में अहम भूमिका रही है और आगे इसका पर्यावरण संतुलित भविष्य में भी रहेगा । वर्तमान समय में प्राद्यौगिकी विकास का प्रभाव एवं इसका उपयोगिता काफी नाजुक हो गया है जिससे की मानवीय समाज एवं पर्यावरण तंत्र का स्थायित्व पर ही खतरा हो गया है। इसलिए मानव समाज का सभी सदस्यों का यह दायित्व बनता है कि पर्य्रावरण को संपूर्ण जीवन तक संतुलित रखें। जागरूक/शिक्षित समाज, सरकार, उद्योग एवं व्यवसाय और गैर सरकारी संस्था के माध्यम से इस दिशा में हो रहे वयक्तिगत एवं सामुहीक प्रयासों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ।

पर्यावरण शिक्षा को विशेषतः आरंभिक उम्र से ही दिया जाय तो इसका लोगों पर पर्यावरण के प्रति एक अच्छा प्रभाव बन सकता है। इसके लिए पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए शैक्षणिक कार्यक्रम का प्रारूप तैयार करने की जरूरत है जो समाज का सभी स्तर पर प्रायोगिक तौर पर स्वीकार्य हो ।

————